[illegible]

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 19 March 2017 14:59

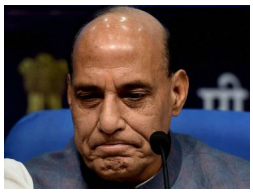

[illegible]

[illegible]

[illegible] : भाजपा ने योगी आदत्यिनाथ को यूपी सल्तनत का ताज पहना दयिा है। नये मुख्यमंत्री योगी अपने मंत्रमिंडल के साथ शपथ लेने के लएि रवाना हो चुके हैं। इसके साथ ही यूपी में एक नयी रंगत का दौर शुरू हो जाएगा जसिकी शुरूआत तो केसरयिा रंग से पैदा हुई, लेकनि यहां पहुंचते—पहुंचते वह भगवा रंगत से छीप गयी। एमपी में उमा भारती को छोड़ कर देश के इतहिास में शायद यह पहला मौका है, जब कसिी धार्मकि प्रतीक रंग—चन्हि वाले अगुआ को कसिी राज्य का मुखयिा में ताज—पोशी की गयी हो।

लेकनि पछिले एक सप्ताह के बीच जसि तरह भाजपा में घटनाक्रम बीते हैं, उसमें आम भाजपाइयों में भारी उत्साह है। कहीं मठिाई, कहीं आतशिबाजी, कहीं रंग—गुलाल, कहीं बधाइयां, कहीं बाजा—ताशे, तो कहीं जहां—तहां सडकों पर जय श्रीराम का उदघोष ही सुना जा रहा है। इस जीत को पछिले लम्बे समय से उत्तर प्रदेश में बसपा और सपा की आपराधकि—समर्पति अराजकता और अन्याय के असहनीय प्रशासन से मुक्ति के तौर पर देखा जा रहा है। इसी वजह से चहुं—ओर हर्ष, उल्लास, अतरिेक, वजिय—भाव और राजनीतकि सफलता का जोश, जुनून और प्रसन्नता का माहौल दखिता दखि रहा है।

लेकनि यह खुशी पूरी सारी भाजपा में ही दखि—व्यापी हो, ऐसा भी नहीं है। वजह यह कि इस सरकार के गठन की प्रक्रयिा के पूरे दौरान यूपी में एकमात्र वशिालतम स्तम्भ माने जाने वाले राजनाथ सहि के खेमे को उपेक्षति ही नहीं, बल्कि अपमानति तक कर दयिा गया है। कहने की जरूरत नहीं कि इस उपेक्षा का असर इस खेमे से जुडे लोगों और समर्थकों में साफ दखिने लगा है।

जो यह केवल यह मान कर चल रहे हों कि 11 मार्च के बाद से ही राजनाथ सहि मीडयिा से अचानक ही दूरी बना गये हैं, वे गलती कर रहे हैं। सच यही है कि पूरी तरह मैनेज्ड—मीडयिा को साधने वालों ने इतनी घेराबंदी करा दी कि वे न अखबारों में दखिे और न ही चैनलों पर उनका चेहरा दखिा। अभी कुछ ही समय पहले तक राजनाथ सहि मीडयिा के चहेते माने जाते रहे हैं।

राजनाथ की यह चुप्पी या मीडयिा से उनकी दूरी की मौजूदा हालत अकारण ही नहीं है। राजनाथ सहि का जन्म खामोश रहने के लएि नहीं हुआ है। चाहे नक्सलियों के अतवािद पर सीधे सोनभद्र पहुंच कर अतवािदयिों को मुंहतोड जवाब देने वाले राजनाथ की छवि यूपी में नक्कल के खलािफ जेहादी जंगजू के तौर पर मानी जाती है। अपराधयिों के खलिाफ जो अभयिान राजनाथ ने छेडा, यूपी को अब तक याद है। वे एक कुशल प्रशासक हैं।

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 19 March 2017 14:59

बस यही तो क्षोभ है इस खेमे से जुडे लोगों का□

राजनाथ सहि ने न केवल पछिले लोकसभा में यहां से अपनी सीट भारी बहुमत से निकाली, बल्कि इस चुनाव में यहां की □ कछोड कर बाकी सारी सीटें भी जतिाने का दमखम दखिाया□ बावजूद इसके कि लखनउ की सारी सीटों पर टकि्ट केवतिरण में राजनाथ सहि की □ कभी नहीं मानी गयी□ चाहे वह कांग्रेस से आयीं रीता बहुगुणा का मामला हो, बसपा से आये ब्रजेश पाठक का प्रकरण हो अथवा मायावती को गालयिां देकर लांछति करने वाले दयाशंकर सहि की पत्नी के पैतरों का मामला हो□ राजनाथ सहि अपने इस चुनाव क्षेत्र की सारी सीटें भाजपा और आर□ स□ स के निष्ठावान कार्यकर्ताओं की झोली में डालना चाहते थे□ परविारवादी परम्□परा की बात करें तो भी पंकज सहि का पत्□ता काट दयिा गया□

उनके खेमे के सूत्रों का कहना है कि बाहर से आये लोगों का स्वागत भाजपा में करने से उन्हें कोई गुरेज नहीं, लेकनि ऐसे बाहरी लोगों को भाजपा में आने के बाद पहले दस—पांच बरस तक संघ—भाजपा के कल्चर को □ डाप्ट कराने का प्रशक्षिण दयिा जाना चाहि□□ यह नहीं कि किसी दूसरी पार्टी छोड कर कोई मतलबी शख्स ओछे स्वार्थ लेकर भाजपा में आये, और उसे टकि्ट से लेकर मंत्री पद तक सीधे सोने की तश्तरी पर परोस दयिा जा□□ इससे भाजपाइयों में अवसाद और असंतोष फैल सक्ता है□

मगर ऐसा हुआ नहीं□ और नतीजा, राजनाथ सहि को भाजपा ने आज आइसोलेशन—वार्ड में भर्ती होने जैसी हालत तक पहुंचा दयिा है□ नयी सरकार के अब राजनाथ की उंगली तो दूर, छांव तक की चाह नहीं□ बावजूद इसके कि राजनाथ का सरकारी आवास योगी आदत्यि से ही सटा है, लेकनि उनके बीच कोई तादात्म्य बन पायेगा, इसका संशय है□

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ **:-**

□□□□□□ □□□□